MAA OMWATI DEGREE COLLEGE

HASSANPUR

NOTES

SUBJECT: - Ancient Societies -I (MC)

CLASS:- M.A (HISTORY 1st SEM.

प्रश्न 1.पुरापाषाण काल की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए

Ans. प्रागैतिहासिक काल से हमारा तात्पर्य उसे कल से है जब मनुष्य लेखन कला नहीं जानता था इस कल की विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए हमें पाषाण के उपकरणों मिट्टी के बर्तनों आदि पर निर्भर रहना पड़ता है इसलिए प्रागैतिहासिक शब्द का अर्थ ही यह निकलता है कि इसका संबंध उक्त अवधि से पहले से है जिस भी तरह से हिसाब लगे मनुष्य ने अपना सांस्कृतिक जीवन लगभग 30 लाख वर्ष पहले शुरू किया था इसके बाद आदि इतिहास आरंभ हो जाता है प्रथम मनुष्य ने जब जन्म कब लिया वह कहां उत्पन्न हुआ और कैसे उसने अपना विकास किया यह इतिहास के विद्यार्थियों के लिए बड़ा ही मनोरंजक विषय माना जाता है प्रागैतिहासिक कालीन मनुष्य के जीवन को जानने के लिए हमें विभिन्न स्थलों से प्राप्त साक्ष पर निर्भर रहना पड़ता है पूर्व शास्त्रियों का मानना है कि पृथ्वी पहले आग और गैस से भरपूर एक गोली के समान थी जो धीरे-धीरे ठंडा होने आरंभ हुई हजारों मिलियन वर्षों की प्रक्रिया के पश्चात पृथ्वी समुद्र तथा पर्वत टिस्ट में आए विद्वानों का अनुमान है कि आज से लगभग 190 करोड़ वर्ष पूर्व पृथ्वी पर होने वाली रासायनिक एवं भौतिक क्रियो के खुला स्वरूप भौतिक तत्वों से जीवन का जन्म हुआ

पूर्व पाषाण काल आखेटक संग्रह

यह समय मनुष्य के जीवन का सबसे अंधकार में समय था उसके चारों ओर मौत मुंह खोल खड़ी थी उस समय मनुष्य में चेतना नाम की कोई चीज नहीं थी उसका जीवन पशुओं के समान था आरंभिक मनुष्य बंदर से बड़ा तथा आधुनिक मानव से छोटा था उनका माथा सकरा तथा डलवा था और झुक कर चलता था उसके हाथ घुटनों के नीचे लटके रहते थे उंगलियां बेडौल होते करण मामू ने से ही कार्य करते थे जैसे पकड़ना खोजना ऐसा चोट करना आदि वे मुंह से कुछ है स्पष्ट आवाज है भी निकाल पाते थे उसी तरह वह किसी खतरे का शिकार का संकेत देते थे पूर्व पाषाण काल को तीन अवस्थाओं में विभाजित किया गया है

1.निम्न पूरा पाषाण काल

2.मध्य पाषाण काल

3 उच्च पूरा पाषाण काल

1.निम्न पूरा पाषाण काल . निम्न पुरापाषाण काल का कल 250000 ईसा पूर्व से एक लाख इस पर्व माना जाता है इस संस्कृति के प्रारंभिक अवशेष उत्तर पश्चिमी भारत के सोहन नदी घाटी से प्राप्त किया तभी से इसे सोहन संस्कृति के नाम से भी जाना जाता है सॉन्ग संस्कृत में बहुत से गंडासे खंडक उपकरण अनेक चित्रित करोड़ था काफी मात्रा में अपरिकृत शल्क प्राप्त हुए इन उपकरणों को बनाने के लिए वाटिकासम पत्थरों का प्रयोग किया गया था यह गोल पत्थर होता है जो पानी के बहन से घिस कर चिकना बन जाता है मानव इन पत्थरों से शल्क उतार कर उपकरण बनाता था

2. **मध्य पुरापाषाण काल**. मध्य पुरापाषाण काल का समय 1 लाख ईसा पूर्व से 50000 ईसा पूर्व तक माना जाता है रेडियो कार्बन विधि के आधार पर इसका कल 50000 ईसा पूर्व से 30000 ईसा पूर्व एका गया है इस काल में मानव

कोर्ट साइट नमक पत्थर का कच्चे माल के रूप में प्रयोग करके उपकरण बनाता था वह पत्थर से फलक उतार कर औजार व हथियार निर्माता करता था जिन में बदक बदक को रचनी फलक या स्थल सलख बैठाणिया प्रमुख थे उपकरण बनाने में करता था इस काल में क्रोध उपकरणों की प्रधानता लगभग समाप्त हो गई थी

3. **उच्च पुरापाषाण काल**. कुछ पुरापाषाण काल में जलवायु को कम आधार हो गई थी इस कल के उपकरणों में पतले फलक और दक्षिण या आदि महत्वपूर्ण है अब मनुष्य ने औजारों पर हथियारों को घिस कर चिकन बनाना आरंभ कर दिया था उच्च पुरापाषाण कालीन संस्कृति के अवशेष इंग्लैंड अफ्रीका स्पेन चीन और भारत में चौहान एवं बेलन घाटी से प्राप्त हुए हैं कुछ पुरापाषाण काल का विकास 30000 ईसा पूर्व से 10000 इस पर्व के बीच हुआ इस युग की विशेषता फलक अथवा ब्लड की तरह धार वाले हथियार एवं औजार हैं इस काल में भी मनुष्य खानाबदोश का जीवन व्यतीत करता था

पूर्व पाषाण कालीन संस्कृति की विशेषताएं.

1. शिकारी संग्रहक.
2. खान पान.
3. निवास स्थान.
4. सामाजिक संगठन
5. वस्त्र
6. औजार व हथियार
7. आर्थिक विकास
8. कला का विकास
9. धार्मिक विकास.

प्रश्न 2. सुमेर के लोगों की राजनीतिक सामाजिक आर्थिक एवं धार्मिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए ।

Ans. जब विश्व की अधिकतर सभ्यताएं अंधेरे की चादर लपेटे पड़ी हुई थी उसी समय दजला और खुराक नदियों की घाटी में एक श्रेष्ठ एवं नगरीय सभ्यता का उदय हुआ जिसे मेसोपोटामिया की सभ्यता के नाम से जाना जाता है दजला और फर्क नदियों की घाटी में एक के बाद एक तीन सभ्यताएं बेबीलॉन तथा ऐश्वर्या की सभ्यताओं का जन्म हुआ मेसोपोटामिया शब्द दो शब्दों अर्थात में तथा पोटाश के मेल से बना है जिसका अर्थ है दो नदियों के बीच की भूमि मेसोपोटामिया का क्षेत्र आजकल इराक के नाम से जाना जाता है आर्मेनिया के पर्वतों की चोटियों से निकलती है जिनकी ऊंचाई 10000 फीट है यह चोटिया हमेशा बर्फ से ढकी रहती है इसलिए इन नदियों में पूरे वर्ष पानी रखना है प्राचीन काल में इन दोनों नदियां सक्रिय तथा हित के निकट भारत की खाड़ी में गिरती थी क्योंकि यह नदियां अपने साथ मिट्टी बह कर लाती थी जिससे यह खड़ी भर्ती चली गई जिसके परिणाम स्वरुप मिट्टी का 300 मिल क लंबा मैदान बन गया इस मैदान में कहीं भी पत्थर नहीं है यह सभ्यता 5000 इस पर्व की है

भौगोलिक स्थिति. मेसोपोटामिया की सभ्यता पश्चिम एशिया में दक्षिण और प्राथमिक नदियों की घाटी में बसी हुई थी इसके उत्तर में 10000 को ऊंची पर्वतमाला है जो हमें संपर्क से ढकी रहती है इसके मध्य में अर्द्ध चंद्राकार मैदान

की पत्ती तथा दक्षिण के अरब का विशाल मरुस्थल प्रदीप है दजला तथा प्रार्थना नदियों द्वारा सूचित होने के कारण इस क्षेत्र में पानी की कोई कमी नहीं थी जिससे यह क्षेत्र बहुत उपजाऊ बन गया प्राचीन समय से दोनों नदियां अपने साथ मिट्टी बह कर लाती थी तथा इस क्षेत्र में जमा करती रहे जिससे इस क्षेत्र की उपजाऊ शक्ति में और भी अधिक वृद्धि होती चली गई मेसोपोटामिया के निवासियों ने सिंचाई के लिए अनेक मेहरोतों का निर्माण भी किया था मेसोपोटामिया के क्षेत्र में समतल मैदान तथा उर्वरा भूमि होने के कारण विभिन्न क्षेत्रों के लोगों ने यहां बसा आरंभ किया इसलिए यहां पर विभिन्न जातियों के लोगों का जमावड़ा हो गया मेसोपोटामिया की भौगोलिक स्थिति इस क्षेत्र की थी कि यह क्षेत्र हमेशा विदेशी आक्रमणकारियों का हवस का शिकार होता रहा।

सुमेर सभ्यता की विशेषताएं

सुमेरियनो का राजनीतिक जीवन.

1. पोटेशि या राजा.

2. सैनिक संगठन.

3. न्याय प्रणाली.

4. कर.

1.**सामाजिक जीवन**.. प्राचीन सुमेरन समाज आर्थिक आधार पर तीन वर्गों बात हुआ था

उच्च वर्ग

मध्यम वर्ग

निम्न वर्ग

2. स्त्रियों की स्थिति.

3. रहन-सहन तथा पहनावा.

4. आभूषण तथा श्रृंगार.

5 मनोरंजन.

6. दास प्रथा.

आर्थिक जीवन

1. कृषि.

2. पशुपालन

3. उद्योग.

4. व्यापार तथा वाणिज्य.

धार्मिक जीवन.

1. विभिन्न देवताओं की पूजा.

2. मंदिर तथा पुजारी वर्ग.

3 मृतक संस्कार.

सांस्कृतिक जीवन

1. शिक्षा तथा साहित्य.

2. शिक्षा.

2. साहित्य.

3. गणित.

4. ज्योतिष.

5. खगोल तथा चिकित्सा शास्त्र.

6 .कला.

प्रश्न 3. **मिस्र सभ्यता की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए**

Ans. मिस्र सभ्यता को कहां से युगीन सभ्यता कहा जाता है इस काल में नगर क्रांति आई और मनुष्य ने नगरों में निवास करना आरंभ कर दिया मनुष्य ने कंस के उपकरण में बर्तन बनाने आरंभ किया जो पहले से अधिक टिका हुआ मजबूत होते थे मिस्र सभ्यता का उदय की नदी की घाटी में हुआ था मिश्रा के विषय में कहा जाता है कि मिश्रा विदेश है जिसे नील नदी सिखाती है तथा इसका पानी पीने वाले लोग मिश्री कहलाते हैं प्रसिद्ध इतिहासकार हेलो डेटस ने तो मिस्र सभ्यता को नील नदी की दिन का कर पुकारा है मिस्र में उर्वरा भूमि का क्षेत्रफल 10000 किलोमीटर से अधिक नहीं है इस छोटे से उपजाऊ क्षेत्र में 12000 व्यक्ति प्रति वर्ग के हिसाब से निवास करते हैं प्राचीन काल में यह वहां बड़े-बड़े पिरामिड बनाया आए जाते थे इसलिए प्राचीन मिस्र की सभ्यता को पिरामिड कालीन सभ्यता भी कहा जाता है

भौगोलिक स्थिति. मित्र अफ्रीका महाद्वीप के उत्तर पश्चिम में नील नदी द्वारा संचित एक छोटा सा देश है इसके उत्तर में भूमध्य सागर तथा एशियाई महिला है दक्षिण में सूडान के जंगल पूर्व में लाल सागर तथा अरब और पश्चिम में लिया है प्राचीन काल में प्राकृतिक सुरक्षित था

खोज. 18वीं शादी के अनुसार प्राथमिक विषय की सभ्यता के विषय में ंभिक रहा और उसके विषय में किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त नहीं हो सके संयुक्त वर्ष 1798 ईस्वी में जब नेपोलियन बोनापार्ट मिश्रा पर आक्रमण किया तो इस सभ्यता से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण सुनकर प्राप्त हुई नेपोलियन बोनापार्ट मिश्रा पर आक्रमण के समय विद्वानों का एक दल उनके साथ था इन विद्यालय प्राप्त किया जिस पर तीन प्रकार की नदियों में कुछ लिखा हुआ था इन लिपियां को पढ़ने में सफलता प्राप्त की इसके फलों से प्राप्त की लिस्ट सभ्यता के शरीर में अपनी जानकारी चाहिए

मिश्रा सभ्यता की प्रमुख विशेषताएं.

.**राजनीतिक जीवन**.

1. राजा तथा फराओ.

2. प्रधानमंत्री.

3. राजकुमार.

4. प्रांतीय शासन.

5. राजस्व प्रशासन.

6. न्याय प्रबंध.

7. सैनिक प्रबंध.

सामाजिक जीवन.

1.सामाजिक विभाजन.

उच्च वर्ग

मध्य वर्ग

निम्न वर्ग

2. पारिवारिक संगठन.

3. निवास स्थान.

4. स्त्रियों की स्थिति.

5 भोजन.

6 पहनावा तथा आभूषण.

7. श्रृंगार की वस्तुएं.

8. मनोरंजन.

आर्थिक जीवन.

1 कृषि.

2. पशुपालन.

3. उद्योग.

4. व्यापार.

धार्मिक जीवन

प्रश्न 4. **पेरीक्लीज के प्रशासनिक सुधारों का वर्णन कीजिए**

Ans. पेरीप्लीज एथेंस का सबसे योग्य एवं शक्तिशाली शासक था उसने एथेंस को विशालता प्रदान करने के साथ-साथ प्रत्येक क्षेत्र सुधार किया इसलिए उसका शासन काल अध्ययन का स्वर्ण युग कहलाता है उसका जन्म एक धनी परिवार में हुआ था उसकी माता प्रसिद्ध विमान के शासक बेटे का सेनापति था जिसका प्रभाव उसे पर पड़ा और भविष्य में वह भी एक अच्छा सैनिक सिद्ध हुआ वह एक अच्छा वक्त भी था और अपने भाषणों से जनता को मंत्र

मुक्त कर देता था वह चाहता था कि स्पार्टा के नियम को शासन को समाप्त करके वहां पर ऐसी व्यवस्था लागू की जाए जिससे जनतंत्र का शासन स्थापित हो और 429 ई तक वह एथेंस का भाग्य विधाता बना रहा है

1.पेरीक्लीज का उद्देश्य.

2.पेरीक्लीज का साम्राज्य विस्तार.

3. प्रजातंत्र का विकास.

4. एथेन्स का पुन निर्माण.

5. भवन निर्माण कला का विकास.

6. मूर्ति कला का विकास.

7.चित्र कला का विकास .

8. संगीत कला.

9 शिक्षा तथा साहित्य का विकास

10. गणित तथा विज्ञान का विकास.

11.पेरीक्लीज की मृत्यु.

प्रश्न 5. **ईसा मसीह के आरंभिक जीवन तथा उनकी शिक्षाओं का वर्णन करें**

Ans. पहली शताब्दी ईसा पूर्व का वर्ष विश्व के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है इस वर्ष एक ऐसे महापुरुष का जन्म हुआ जिसने पूरी दुनिया को एक नई रहा दिखलाई यह महापुरुष विश्व के इतिहास में ईसा मसीह के नाम से जाना जाता है इसने ईसाई धर्म की स्थापना करके विश्व को ऐसा धर्म प्रदान किया जिसमें दीन दुखियों को सहायता अहिंसा प्रेम सद्भाव व्यवहार एकता भाईचारे की भावना तथा एक ईश्वर का सिद्धांत पर बोल दिया जाता है ईशा की मृत्यु के हजार वर्षों के पश्चात इस धर्म के अनुयाई आज भी संसार के हर देश में देखे जा सकते हैं

ईसा मसीह से पूर्व की धार्मिक स्थिति. ईसा मसीह के जन्म से पूर्व रूम के लोग अंधविश्वासी थे रूम में उसे समय एक ईश्वर के स्थान पर विभिन्न देवी देवताओं की और सम्राटों की भी एक देवता के रूप में उपासना की जाती थी इतिहासकारों का मत है कि प्राचीन काल में रूम के लोग एक ईश्वर की उपासना करते थे परंतु जैसे ही यह यूनानियों के संपर्क में आए उन्होंने एक देवता के स्थान पर अनेक देवी देवताओं की प्रार्थना करनी आरंभ कर दी रूम के लोग जूनो देवी को प्रमुख मानते थे उनका विश्वास था कि जूनो देवी ही स्त्री को गर्भवती करती है इस देवी की उपासना सभी घरों में की जाती थी जुपिटर रोमन लोगों का एक प्रमुख देवता था उसे आकाश तथा ऋतुओं का देवता माना जाता था इनके अतिरिक्त मार्च को कृषि तथा युद्ध के देवता के रूप में पूजा जाता था कलाइनर्स को उच्च श्रेणी का देवता माना जाता था इनके अलावा मिनर्वा ज्ञान की तथा डायमंड प्रेम की देवी कहलाती थी विदेशियों के संपर्क में

आने से रोमन लोगों ने इस तथा सीरियस की उपासना करने की प्रारंभ कर दी थी इन देवताओं की उपासना मिश्रा में की जाती थी रोमन सम्राटों में जूलियस सीजर अगस्त की उपवास में की जाती थी

यूनानियों की भांति रोमन लोगों ने भी अपने देवी देवताओं को प्रसन्न करने के लिए बड़े-बड़े मंदिर बना रखे थे मंदिरों में देवी देवताओं की उपासना बड़े धूमधाम से की जाती थी देवताओं को प्रसन्न करने के लिए विभिन्न प्रकार के चढ़ावे तथा बलिया चढ़ाई जाती थी धार्मिक कार्य या पूजा पाठ का कार्य पुरोहितों के द्वारा संपन्न किया जाता था सार्वजनिक धार्मिक पूजा अर्चना धर्म समितियां के द्वारा की जाती थी जिन्हें कॉलेज कहा जाता था कुमारियों की समिति को अग्निरक्षिका कहा जाता था उनमें 6 से 10 वर्ष तक की वाली गाय होती थी उन्हें 30 वर्षों तक सफेद वस्त्र धारण करने होते थे तथा ब्रह्मचर्य का पालन करना पड़ता था इसके अतिरिक्त रूम में यहूदी धर्म भी प्रचलित था और अधिकतर लोग इस धर्म के अनुयाई थे ईशा के जन्म के समय इस धर्म में भी काफी बुराइयां पर चली थी इस प्रकार ईशा के जन्म से पूर्व रूम के लोग बहुदेववादी थे

ईसा मसीह तथा ईसाई धर्म उत्थान

1.ईसा का जन्म .

2. बाल्यकाल.

3.ईसाई धर्म का उत्थान .

ईसाई धर्म की प्रमुख शिक्षाओं

1. एक ईश्वर की एकता.

2. अच्छाआचरण.

3. मानव प्रेम.

4. समानता.

5. ईश्वर की उपासना.

6. धार्मिक सहनशीलता.

7. स्त्रियों का सम्मान.

8. निर्धनों की सहायता.

9. सत्य में विश्वास.

10. मूर्ति पूजा में अविश्वास.

11. न्याय तथा स्वानुभूति.

प्रश्न 6. **हड़प्पा सभ्यता के बारे में आप क्या जानते हैं उसकी प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए**

Ans. विश्व की अन्य प्राचीन सभ्यताओं की तरह सिंधु घाटी की प्राचीन सभ्यता का उदय भी नदी घाटी में हुआ इस सभ्यता के आरंभिक अवशेष सिंधु नदी घाटी में यह हड़प्पा और मोहनजोदड़ो नमक स्थलों से प्राप्त हुए हैं सिंधु नदी

की तलती में स्थित होने के कारण इस सभ्यता को सिंधु घाटी की सभ्यता कहते हैं इस सभ्यता को एक अन्य नाम हड़प्पा संस्कृति के नाम से पुकारा जाता है क्योंकि सभ्यता के आरंभिक अवशेष हड़प्पा नामक स्थान से प्राप्त हुए हैं **खोज**. हड़प्पा संस्कृति की खोज मनोज की स्थिति में हुई जॉन परंतन ने मुल्तान से लाहौर के लिए एक रेल की पटरी बिछानी का कार्य कर रहा था उसे पत्थरों की आवश्यकता पड़ी एक ऊंचे टीले कोर्स ने देखा उसे तिल की खुदाई करके कुछ सिम प्राप्त हुई यूट्यूब से उसने अपनी रेलवे लाइन पर पत्थर बिछी इन यूट्यूब पर कुछ लिखा हुआ था जिसे कोई नहीं पढ़ सका काफी समय तक यह रहस्य बना रहा 1921 से 1922 में डॉक्टर बनर्जी और दयाराम साहनी ने हड़प्पा में खुदाई का कार्य आरंभ किया यहां से भवन मोहरे बर्तन आदि प्राप्त हुए 1925 ईस्वी में भारतीय पुरातत्व वेतन डॉक्टर रोड बनर्जी ने मोहनजोदड़ो नामक स्थान से हड़प्पा जैसी वस्तु प्राप्त की मोहनजोदड़ो सिंधी के लरकाना जिले में स्थित है मोहनजोदड़ो का अर्थ मृत्यु का टीला है या प्रदेश कराची से 320 किलोमीटर दूर है
हड़प्पा संस्कृति की विशेषताएं. हड़प्पा संस्कृति एक उच्च कोटि की नगरी सभ्यता थी इस सभ्यता की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार से हैं

1. नगर. खुदाई खुदाई में हमेंहड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो नमक दोनों नगरों को देखने से पता चलता है कि इन दोनों नगरों की नगर योजना एक समान थी दोनों नगरों की पश्चिम दिशा में एक समानांतर चतुभुजाकार घड़ी थी इस गाड़ियों का आकार तार से दक्षिण की ओर 400 500 गज पूर्व से पश्चिम में 200 से 300 गज था इन कड़ियों की ऊंचाई 40 फीट की लगभग थी इन गाड़ियों में सार्वजनिक भवन कृष्णा नगर अन्ना नगर आदि बने हुए हैं इन गाड़ियों से हटकर वास्तविक नगर आरंभ होता था दोनों नगर लगभग 2.3 वर्ग मील तक फैले हुए थे नगरों की सुरक्षा के लिए चारों ओर ऊंची दीवार बनी हुई थी सड़के एक दूसरे को समकोण पर कटी थी यह सड़के सीधी पूर्व से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण की ओर जाती थी मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुख्य सड़क की चौड़ाई 33 फीट तक थी अन्य सड़क 18 से 20 फीट तक चौड़ी होती थी उन सड़कों को समकोण पर बनाने का हड़प्पा संस्कृति के लोगों का मुख्य उद्देश्य यह रहा होगा यह सड़के कच्ची होती थी इसलिए तेज हवाएं चलने पर यह अपने आप साफ हो जाती है दूसरे क्योंकि हड़प्पा और मौजूद दोनों ही नगर सिंधु नदी घाटी में वाशी में थे इसलिए सके बाढ़ आदि से भी नगर की रक्षा करती थी सड़कों के दोनों और कूड़ेदान रखे हुए प्राप्त हुए हैं अतः हड़प्पा संस्कृति के लोग सफाई की ओर बहुत ध्यान देते थे वे कचरा और गंदगी को उनका डिजाइन में डालते थे

2. भवन.

3. विशाल भवन.

4. विशाल स्नानागार.

5. नालियों की व्यवस्था.

6. बाजार.

सामाजिक जीवन की विशेषताएं

1 सामाजिक वर्गीकरण.

2. मातृ सत्तात्मक समाज.

3. खान पान.

4. पहनावा.

5. आभूषण तथा श्रृंगार.

6. मनोरंजन.

आर्थिक जीवन

1 कृषि.

2. पशुपालन.

3. व्यापार

4. उद्योग.

धार्मिक जीवन.

1 मूर्ति पूजा.

2. शिव की पूजा.

3. मातृ देवी की पूजा.

4. पशु पूजा.

5. वृक्ष पूजा.

6. धार्मिक संस्कार.

7 दहा संस्कार.

सांस्कृतिक जीवन

1 शिल्प कला.

2. मूर्ति कला.

3. चित्रकला.

4. शिक्षा तथा दर्शन.

5. भवन निर्माण कला.

प्रश्न 7. वैदिक कार्यों की राज्य संरचना पर प्रकाश डालिए

Ans. वैदिक कालीन राज्यों के समय भारत में राज्य का उत्थान हुआ आर्यों ने आरंभ में एक कबीलाई शासन प्रबंध की स्थापना की जो उत्तर वैदिक काल में उन्होंने एक शक्तिशाली राज्य की स्थापना की विरोधी ने अपनी पुस्तक डी नेचर ऑफ द स्टेट में लिखा है कि हम किसी भी ऐसे मानवीय समाज को राज्य का नाम देने से इनका नहीं कर सकते जो राजनीतिक तौर पर संगठित हो चाहे वह कितनी भी खानाबदोश अवस्था में क्यों ना हो कुछ विद्वानों का मानना है कि ऋग्वेद में मिलने वाले विचारों में राज्य की सट्टा की सूचक संगठनों जैसे निश्चित क्षेत्र का सार्वजनिक

सट्टा एवं अधिकारीगण देखने को नहीं मिलते बल्कि एक अर्ध घुमंतु जन समुदाय एवं पशुपालन पर आधारित अर्थव्यवस्था के प्रमाण मिलते हैं

वैदिक राज्य. रामशरण शर्मा के अनुसार वैदिक काल में आर्यों ने जिस राज्य की स्थापना की वह जनजातीय सत्ता पर आधारित थी उनके अनुसार राजन जनजाति मुखिया की उपाधि थी जिसका अर्थ है वह जो प्रकाशन प्रकाशमान है आर्यों ने राजा का चुनाव सभा और समिति के द्वारा किया जाता था परंतु इसमें जनजातीय नेतृत्व में अनुवांशिक गुना के स्थान पर शारीरिक या अन्य गुण अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे उनके पास नियमित सेवा तथा कराधान व्यवस्था भी नहीं थी इसके अलावा प्रशासन भाग लेने वाले अधिकारियों की भी संख्या आधा दर्जन से अधिक नहीं थी इसलिए ऋग्वेद में जिस प्रकार की सत्ता संरचना देखने की मिलती है उसे राज्य नहीं कहा जा सकता परंतु उसे जनजातीय सरदारी व्यवस्था कहा जा सकता है

वैदिक कालीन प्रशासनिक व्यवस्था.

राजनीतिक संगठन. प्रगति कल में आधुनिक उच्च कोटि की शासन प्रणाली की स्थापना की कार्यों का राजनीतिक संगठन वंशीय परंपरा पर आधारित था जिसकी सबसे छोटी इकाई परिवार थी परिवार में सबसे बड़ी उम्र का व्यक्ति परिवार का मुखिया कहलाता था जो समस्त परिवार की देखभाल करता था कई परिवारों को मिलकर कई गांव बनते थे पर गांव का मुखिया ग्रामीण कहलाता था कई गांव से एक विश्व बनता था जिसका मुख्य विश्व पति कहलाता था दो या तीन विषयों के मेल से एक जान बनता था जिसका मुखिया राजा या राजन कहलाता था जान उसे समय कवियों की तरह थे और उनमें जनजातीय सरदारी व्यवस्था प्रचलित थी रिग वैदिक काल में मत्स्य पूर्व अणु आदि जानती उत्तर वैदिक काल में जनों के स्थान पर बड़े-बड़े राज्य जन राज्यों की स्थापना होनी आरंभ हो गई अब आर्यों का प्रसाद दूर दराज के क्षेत्र में हो गयाउन्होंने लोहे की कुलहड़ियां बनाकर जंगलों को साफ करके उसे कृषि योग बनाना आरंभ कर दिया यही कारण था कि इस काल में जनपद विशाल साम्राज्यों में परिवर्तित होने लगे

राजा. रिग वैदिक काल में जन्म या राज्य का मुख्य राजा के राजन कहलाता था वैसे तो राजा का पद पत्रक होता था परंतु कभी-कभी उनका चुनाव भी किया जाता था वह गाड़ी पर बैठने से पहले शपथ लेता था यदि मैं तुम्हारे साथ विश्वास बात करूं तो मुझे अपने समस्त यज्ञों और धन का फल ना मिले और मैं अपने पूर्वजों की यज्ञ के परिणामों से वंचित रह जाऊं प्रजा की धनराशि मेरा शेर है उसका यश मेरा मुख है उसका तेज मेरे कैसे और सैम शुरू है मेरी दिव्या पर जाकर हित में बात कहे मेरी वाणी प्रजा के हित में बात कहे राजा का पद तभी वेद माना जाता था

प्रशासनिक अधिकारी.

सभा व समिति

विधि न्याय एवं दंड व्यवस्था.

वैदिक राज्य की प्रकृति.

प्रश्न 8. महावीर स्वामी की आरंभिक जीवन तथा उनकी शिक्षाओं का वर्णन कीजिए

Ans छठी शताब्दी ईसापुर में उत्तरी भारत की मध्य गंगा घाटी क्षेत्र में अनेक धार्मिक आंदोलन का उदय हुआ विभिन्न मतों वाले महापुरुष अथवा सन्यासी घूम-घूम कर अपनी शिक्षाओं अथवा जीवन दर्शन का जन समुदाय में प्रचार करते थे

नवीन धार्मिक आंदोलन का स्वरूप. ब्राह्मण एवं उपनिषदों में वैदिक मंत्त्रों को देव वाक्य माना जाता था और उन्हें कोई परिवर्तित नहीं कर सकता था कुछ लोगों का विश्वास था कि किसी भी धार्मिक अनुष्ठान में मंत्र उच्चारण में किसी भी प्रकार की त्रुटि हो जाने पर भयंकर परिणाम सहनने पड़ेंगे अतः इस काल में पुरोहितों का बहुत महत्व बढ़ गया उनकी धन लूट कर्मकांड भी आडंबर आदि ने वैदिक धर्म को नीरस बना दिया पुरोहितों का व्यवहार जनता के लिए अत्यंत कष्टदायक होने लगा राशियों एवं यज्ञ आदि अनेक जटिल तथा दीर्घकालीन यगों में पशु वध तथा पुरोहितों को दी जाने वाली दान दक्षिणा के परिणाम स्वरुप पशु तथा धन की अपार हानि हो रही थी शासक वर्ग से लेकर जनसाधारण जनता तक यही विश्वास विकसित हो रहा था कि यज्ञ और बाली से ही स्वर्ण की प्राप्ति संभव है या गांव के द्वारा ही भौतिक एवं आध्यात्मिक सुख प्राप्त हो सकता है

धार्मिक आंदोलन की उत्पत्ति के कारण.

1. वैदिक धर्म में दोष.=
2. ब्राह्मणों का नैतिक पतन.=
3. खर्चीली हिंदू धर्म.=
4. मंत्र एवं देवों में विश्वास. =
5. वर्ण व्यवस्था. =
6. जादू टोने में विश्वास =
7. संस्कृत भाषा. =
8. आर्थिक कारण. =
9. राजनीतिक एकता का अभाव=.
10. महावीर स्वामी एवं महात्मा बुद्ध का जन्म.=

महावीर स्वामी का जन्म. महावीर स्वामी के बचपन का नाम वर्तमान था उनका जन्म 599 ईसा पूर्व वैशाली के निकट कूड ग्राम नामक स्थान पर हुआ था कुछ इतिहास महावीर स्वामी की जन्म तिथि 540 मानते हैं उनके पिता का नाम सिद्धार्थ था उनकी माता का नाम त्रिशला था जो लक्ष्मी वंश के शासक चेतक की बहन थी जैन साहित्य के अनुसार वर्धमान के जन्म से पूर्व उनकी माता त्रिशला ने एक रात 14 सपने देख उसने इन सपनों के विषय में अपने पति अर्थात सिद्धार्थ को बताया सिद्धार्थ ने ज्योतिषियों को बुलाकर उन सपनों के विषय में पूछा तो उन्होंने बताया कि उनके घर में जन्म लेने वाला पुत्र था पुत्रियां तो चक्रवर्ती सम्राट बनेगा या फिर महान तपस्वी ऐसा माना जाता है कि जिस समय वर्तमान का जन्म हुआ था तो उसे समय आकाश में चारों ओर प्रकाश हो गया था सिद्धार्थ ने अपने पुत्र का नाम वर्धमान रखा वर्धमान बचपन से ही बड़ा वीर एवं निडर बालक था एक बार उसने एक बच्चे को अजगर के चंगुल से बचाया था ऐसा माना जाता है कि एक दिन वर्धमान अर्थात महावीर स्वामी कुछ बच्चों के साथ खेल रहे थे

कि अचानक उन पर एक हाथी में हमला कर दिया परंतु वर्धमान ने बड़ी आसानी से उस हाथी को काबू कर लिया था कहा जाता है कि उनके द्वारा किए गए बहादुर के कारनामों से ही वे महावीर के नाम से प्रसिद्ध हुए

विवाह तथा गृह त्याग. बचपन से ही महावीर एकांकी जीवन को ज्यादा पसंद करते थे यदि उनकी शिक्षा तथा पालन पोषण राज किया था थर्ड वार्ड से किया गया था परंतु फिर भी महावीर का मन सांसारिक कार्यों में नहीं लगता था यही कारण था कि युवा होने पर उनका विवाह यशोदा नमक क्षत्रिय कन्या के साथ कर दिया गया कुछ समय पश्चात उनके यहां एक कन्या ने जन्म लिया जिनके नाम अनुज या प्रियदर्शनी रखा गया भविष्य में जिसका विवाह जमाली नमक क्षत्रिय के साथ किया गया 30 वर्ष की अवस्था में उन्होंने अपने माता-पिता की मृत्यु से दुखी होकर अपने बड़े भाई नंदी वर्धन की आज्ञा लेकर गृह त्याग दिया।

ज्ञान प्राप्ति.

धर्म प्रचार . ज्ञान प्राप्ति के पश्चात महावीर स्वामी में स्थान का प्रथम घूम कर अपनी शिक्षाओं का प्रचार जनसाधारण जनता में किया वे केवल बरसाती के चार महीने आराम करते थे उनकी शिक्षाओं का केंद्र बिहार था महावीर स्वामी को शिक्षाओं से प्रभावित होकर अनेक लोगों ने जैन धर्म अपना लिया उनके जीवनकाल में जैन धर्म के अनुयायियों की संख्या 14000 तक पहुंच गई थी

महावीर स्वामी की मृत्यु महावीर स्वामी की लगभग 30 स्वतंत्रता का अपनी शिक्षाओं का प्रसार किया 72 वर्ष की आयु में अर्थात 468 ईसा पूर्व में उनका राजगीर के निकट पावापुरी नामक स्थान पर देहांत हो गया

जैन धर्म की प्रमुख शिक्षाएं.

1.निवृत्ति मार्ग.

2. त्रिरत्न.

3. कर्म का सिद्धांत.

4. पंच महाव्रत.

1 सत्य.

2 अहिंसा.

3.अस्तेय (चोरी न करना.)

4 अपरिग्रह. (धन का संग्रह ना करना.)

5 .ब्रह्मचर्य

6. कठोर तपस्या.

7. शुद्ध आचरण.

8. तीर्थकरो की पूजा.

9. ईश्वर में अविश्वास.

10 वेदों तथा संस्कृत भाषा की पवित्रता में अविश्वास.

11. जाति प्रथा में अविश्वास.

12. यज्ञ तथा बालीयो का विरोध.

13. निर्वाण

प्रश्न 9 महात्मा बुद्ध के जीवन में उनकी शिक्षाओं का वर्णन कीजिए

Ans महात्मा बुद्ध का जन्म. महात्मा बुद्ध का जन्म 567 ईसा पूर्व बिहार के सखी गंडास की राजधानी कपिलवस्तु में हुआ कुछ इतिहासकार उनकी जन्म तिथि क्रम से 50063 570 ईसा पूर्व मानते हैं परंतु अधिकतर विद्वान इस मत से सहमत हैं कि महात्मा बुद्ध का जन्म 567 पूर्व में हुआ था उनके पिता का नाम सुयोधन था जो सांप के गणराज्य के राजा थे उनकी माता का नाम महामाया था जो गोली गणराज्य राजकुमारी थी बहुत परंपराओं के अनुसार एक रात श्वेत साथी ने बुद्ध की आत्मा के रूप में जिसने अपनी फोन में एक कमल पुष्प पकड़ रखा था चार और तीन चक्कर लगाकर रानी महामाया के गर्भ में प्रवेश किया रानी ने इस सु के विषय में अपने पति को बताया ज्योतिश्वर ने से पूछे जाने पर उन्होंने बताया कि उनके घर में एक महान बच्चा जन्म लेने वाला है उसके पश्चात स्थानीय गर्भवती थी कुछ दिनों के पश्चात रानी महामाया ने अपने मायके जाने की इच्छा प्रकट की दुर्योधन ने राष्ट्रीय ढंग से पार्टियों में बिठाकर महामाया को अपनी मायके के लिए रवाना किया रानी के रास्ते में समरी नामक वन में आराम करने की छात्रा कट की यहीं पर महत्वपूर्ण का जन्म हुआ बच्चे के जन्म के पश्चात महामाया का परिवर्तनमें बच्चों के जन्म पर खूब खुशियां मनाई गई किसी बच्चे का नाम सिद्धार्थ रखा गया किसी अवसर पर आशिक नमक ज्योतिष में भविष्यवाणी की थी यह बच्चा बड़ा होकर महान शासक बनेगा तथा साथी चेतावनी विधि यदि यह बालक व्रत होगी मृतक और संन्यासी को देख लेगा तो मैं संन्यास धारण कर लेगा सिद्धार्थ के जन्म के कुछ दिनों पश्चात ही मोह माया का देहांत हो गया अतः सिद्धार्थ का पालन पोषण होती है माता महा प्रजापति गोतमी ने किया यही कारण था कि ही माता के नाम पर सिद्धार्थ को गौतम भी कहा जाता था

बालयाकाल. महात्मा बुद्ध का बचपन बड़े ही राजकीय ठाट बार से गीत उनके पिता ने उनके पालन पोषण तथा सुख सुविधाओं में कोई कसर नहीं छोड़ी उनकी शिक्षा दीक्षा का भी उचित प्रबंध किया गया उनके लिए निवास तथा मनोरंजन के लिए ऋतुओं के अनुसार महल बनवाए ज्योतिया की भविष्यवाणी को ध्यान में रखकर भी उनके भोग विलास में लिफ्ट रहने के सभी प्रबंध किए गए 55 से ही सिद्धार्थ एकांत थी प्रिया जीवन व्यतीत करते थे

विवाह. सिद्धार्थ के मन को सांसारिक कानून में लगाने का पूरा प्रयास किया गया 16 वर्ष की आयु में उनका विवाह यशोदा का नमक राजकुमारी के साथ कर दिया गया कुछ समय पश्चात उनके यहां एक पुत्र रत्न हुआ इसका नाम राहुल रखा गया

ग्रहत्याग.

ज्ञान प्राप्ति. घर त्यागने की पश्चात गौतम ने 7 दिन अनुप्रिया नमक आम के बैग में व्यक्तित्व इसके पश्चात विराज ग्रह चले गए कठोरता तक और अल्पाहार के कारण गौतम अर्थात सिद्धांत का शरीर सुख सुपर कांटा हो गया यह बिल्कुल शक्तिहीन हो गए कहा जाता है कि यदि सुजाता नमक लड़कियों ने एक गिलास दूध नहीं पिलाता तो

उनकी मृत्यु हो जाती इस पर पंच ब्राह्मण सुधार से नाराज हो गए और उन्होंने उनके साथ छोड़ दिया इसके 50 सिद्धार्थ गया नामक स्थान पर गए और वटी वृक्ष के नीचे समाधि लगाकर बैठ गई उन्होंने रन लिया कि जब तक सच्चा ज्ञान प्राप्त नहीं हो जाता जब तक वह अपनी समाधि से नहीं उठाएंगे 7 दिन की तपस्या की पश्चात आठवें दिन वैशाख की पूर्णिमा को गौतम को सच्चा ज्ञान प्राप्त हो गया ज्ञान प्राप्ति के पश्चात गौतम सिद्धार्थ कहलाए जी वार्ड में रखें उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ था आज भी उसे बौद्धि वृक्ष कहा जाता है

धर्म प्रचार और मृत्यु. महात्मा बुद्ध 80 वर्ष की आयु तक अपनी शिक्षाओं का प्रचार एक स्थान से दूसरे स्थान पर करते रहे उनके शिष्य भी टुकड़ियों में विभाजित होकर धर्म प्रचार करते थे प्रत्येक टुकड़ी में 300 से 500 तक भिक्षु होते थे भी वर्ष की चार महीना को छोड़कर पूरे वर्ष घूम-घूम कर अपनी शिक्षाओं का प्रसार करते थे वर्षा काल में महत्वपूर्ण और जेटवन नामक स्थान पर रुकते थे वैल्यू 1 में सम्राट बिंबिसार ने एक बिहार बनवाया था महात्मा बुद्ध जहां भी जाते थे उनकी शिक्षाओं को सुनने के लिए एक भारी पड़ती थी 45 वर्ष तक अपनी शिक्षाओं का प्रचार करने के पश्चात 487 ईसा पूर्व में कुशीनगर नामक स्थान पर उनको महापरिनिर्वाण प्राप्त हो गया

बौद्ध धर्म की शिक्षाएं.

1. चार आर्य सत्य

2. अष्टमार्ग .

3. अहिंसा.

4. दस सील.

5. पुन जन्म.

6. जाति प्रथा में अविश्वास.

7. आत्मा में अविश्वास.

8. कर्मकांड का विरोध.

9 वेदों और संस्कृत भाषा में अविश्वास.

10 घर तपस्या में अविश्वास.

11. निर्वाण.

प्रश्न10.मौर्य काल में भारत के सामाजिक जीवन का वर्णन कीजिए

Ans मौर्यकालीन भारतीय समाज के विषय में जानकारी विभिन्न स्रोतों जैसे ही मैराथन की इंडिका कौटिल्य के अर्थशास्त्र की मुद्रा राक्षस पुराने अभिलेख आदि से मिलती है उसे समय भारतीयों का सामाजिक स्तर बहुत उच्च था लोक चरित्र निर्माण पर अत्यधिक बल देते थे संयुक्त परिवार में रहकर मिलजुलकर कार्य करते थे यदि इस समय समाज वर्ण व्यवस्था में विभाजित था हिंदू सामाजिक संगठन अपने वर्ण आश्रम अर्थात जीवन व्यवस्था और व्यवस्था पर आधारित कर्तव्य के लिए प्रसिद्ध थे इस व्यापक विभाजन का सम्मान मूलतः वर्ण सचेत राज्यों से था इन्होंने स्वयं आर्य उत्तर लोगों से अलग करने के लिए आर्यवान और दसवा यह दो विभाग किए थे बाद में इसका

प्रयोग हिंदू समाज के चार भागों में विभाजित ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य सूत्रों के लिए किया जाने लगा दूसरा शब्द जाति धर्म साथियों के अनुसार न केवल चार जातियों तथा समूह का सूचक है अपितु उन अनेक नई जातियों का भी जो अंतर्जातीय विभागों से उत्पन्न संतानों को समझ में स्थान देने के लिए बनाई गई है की जातियां पुस्तक खंड बन गई

मौर्य कालीन समाज

1. वर्ण व्यवस्था.

2. विवाह.

3.स्त्रियों की स्थिति.

4. दास प्रथा.

5. खान पान.

6. पहनावा.

7. मनोरंजन.

प्रश्न 11. गुप्तकालीन अर्थव्यवस्था के विकास को स्पष्ट कीजिए

Ans. गुप्त काल में भारत की आर्थिक क्षेत्र में बहुत उन्नति हुई उसे समय की अर्थव्यवस्था पूरी तरह से कृषि तथा पशुपालन पर आधारित थी गुप्त काल में कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का मूल आधार थी कि कल में अधिकतर जंगलों को काटकर और प्रति भूमि में खेती करके कृषि का अत्यधिक विस्तार किया गया था नारद स्मृति के अनुसार यदि किसी कृषि योग भूमि का मालिक कहीं चला गया हो और वह उसे भूमि पर कृषि नहीं करता हो तो अन्य व्यक्ति खेती कर सकता है क्योंकि जब स्वामी वापस आ जाए तो वह अपना खेत वापस ले सकता है उसे व्यक्ति को जिसने उसकी अनुपस्थिति में खेती की हो और जो धान कृषि पर खर्च किया हो आधा कर देना चाहिए वह मिला था पर कामत है कि कल में पंजाब में उत्तर प्रदेश के बराबर कृषि का विकास नहीं हुआ था यही कारण था कि समुद्रगुप्त ने पंजाब को जीतने के पश्चात भी अपने साम्राज्य में सम्मिलित नहीं किया था उसे कल में किसानों के खेत छोटे-छोटे टुकड़ों में विभाजित थे किसान अपने परिवार के सदस्यों की सहायता से स्वयं खेती करते थे उसे समय लगभग सभी फैसले उगाई जाती थी गेहूं जो आदि की फैसले की जाती थी उसके अलावा जब की दो कि में गेहूं की दो कि में उगाई जाती थीदोनों और सांपों में कुलथी चना राजमा मसूर अरहर कड़ी पान सुपारी प्याज लहसुन राशिफल लौकी आज उगाई जाती थी उसकी अतिरिक्त वृक्ष मसाले नंगी कटहल अनार अंगूर केला नारियल खजूर से आदि भी भारी मात्रा में उगाए जाते थे कल में कृषि पूरी तरह से वर्ष पर निर्भरती परंतु फिर भी कुओं तालाबों नेहरू आदि से भी खेती की सिंचाई की जाती थी सरकार किसानों की सिंचाई के साधन उपलब्ध कराने का प्रयास करती थी पानी को नालियों द्वारा खेतों तक ले जाया जाता था समुद्रगुप्त ने सुदर्शन झील की मरम्मत कराई थी

1.कृषि.

2. पशु पालन

3. उद्योग.

4. धातु उद्योग.

5. मिट्टी के बर्तन.

6. लकड़ी का सामान.

7. वस्त्र उद्योग.

8. अन्य उद्योग.

9. देशी व्यापार.

10. विदेशी व्यापार.

प्रश्न 12. भारतीय सामंतवाद पर एक संक्षिप्त नोट लिखिए.

Ans भारत में सामंतवाद के उदय के साक्षी गुप्त काल से पूर्व ही दिखाई देने आरंभ हो गए थे सामंत शब्द की उत्पत्ति लाठी की भाषा के शब्द क्यूट से हुई है इसका अर्थ है भूमिका टुकड़ा भूमि के टुकड़े को जागीर कहा जाता है भारत में सामंतवाद विद्वानों के लिए वाद विवाद का विषय बना हुआ था क्योंकि भारतीय सामंतवाद यूरोप के सामंतवाद से गुना था यही कारण है कुछ इतिहासकार इसे अर्थ सामंतवाद भी मानते हैं परंतु वह मिला था पर कामत है कि इस प्रकार की शब्दावली का प्रयोग करना व्यर्थ में सतर्क रहने की कोशिश मात्र है विशेष पर जब यह स्पष्ट को कर दिया गया है कि सामंतवाद का भारतीय स्वरूप विश्व के दूसरे सामंतवादी शेरों को में मुख्य रूप से समान होते हुए भी कुछ रूपों में उनसे भिन्न है इस व्यवस्था में राजा अपनी अधिकारियों या सामंतों को कम या अधिक मात्रा में भूमि से मिलने वाली है प्रदान करता था भूमि अनुदान देने का प्रचलन जा री हुआ किस समाजवादी व्यवस्था को और बल मिला कृषि के कार्य किसानों एवं सूत्रों द्वारा की जाती थी सामंत राजा से किसी भूमि पर से लगन एकत्र करते थे वह इस राजस्व से एक भाग राजा को देते थे बचे हुए राधेश्याम में से एक सेवा की भर्ती करते थे और आवश्यकता पड़ने पर राजा की सहायता करते थे

राजपूत काल में सामान दो प्रकार के थे एक जो सामंत जो राजा से नगद वेतन की बदले भूमिका राजस्व प्राप्त करते थे तथा दूसरा वे ऐसे शासन या सरदार होते थे जो पहले ही किसी ने किसी प्रदेश के शासक थे और अपनी दुर्बलता अथवा पराजय के कारण राजा की अधीनता स्वीकार कर उसके अधीन सामंत बन गए थे इसके अतिरिक्त पुरोहितों पुजारी आदि को भी लगन मुक्त भूमि अनुदान में दी जाती थी परंतु इस श्रेणी के सामंतो से सैनिक सेवाएं नहीं ली जाती थी

भारतीय सामान में बड़े-बड़े सामंत अप समान तथा कृषक प्रमुख थे बड़े सामंतों को महासमुंद महा सामान्य अधिपति मंडलेश्वर आदि कहा जाता था जबकि उपसमांत ठाकुर भोगी उपभोक्ता आदि कहलाते थे सामंत अपने कर्मचारियों की सहायता से लगन एकत्र करते थे कुछ सामंत भूमि को कृषि कार्यों के लिए ठेके पर भी दे देते थे

1.सामंतवाद का उदय.

2. राजनीतिक सामंतवाद का उदय.

3. सामंतों के अधिकार.

4 .सामंतों के कर्तव्य.

5.सामंतों के पर प्रतिबन्ध.

6. सामंतवाद के गुण.

7. सामंतवाद के दोष.